

पद ३३३

(राग: खमाज - ताल: ध्रुमाळी)

बिना शहर से आया मुसाफिर । सौदा ले उठ भागा रे ॥ध्रु.॥ ना
रही उसकी नाम निशानी । ना कोई आगा पीछा रे ॥१॥ मूरख
होवे सो भटकत फिरेगा । सुगर होय सो जागा रे ॥२॥ मानिक के
मन तेरा नाम हंसा । मत हो रहो कागा रे ॥३॥